लौहित्य साहित्य सेतु : सहयोगी विद्वानों द्वारा पुनरीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

राभा जनजाति की मृत्यु से संबंधित लोक-विश्वास और लोकाचार

वर्षा राभा

...आप नहीं हैं इसलिए सेमल पेड़ पर कबतूर भी रो रहा है। आप फिर से मानव रूप में जन्म लें, पशु-पक्षी के रूप में जन्म न लें।

असम अनेक जाति-जनजाति-उपजातियों की मिलनभूमि है। यद्यपि असम की संस्कृति और यहाँ के लोग भिन्न हैं, फिर भी यहाँ के लोग एकसाथ 'आमि असमीया' (=हम असमीया हैं) कहकर अपना परिचय देते हैं । राभा असम की एक प्रमुख जनजाति है । राभा जनजाति की छोटी–छोटी शाखाएँ हैं । राभा लोग सिर्फ असम में ही नहीं, मेघालय और भूटान में भी बसते हैं । राभा लोग मूलतः मंगोलियन हैं। यहाँ हम राभा जनजाति की मृत्यु से संबंधित लोक-विश्वास तथा लोकाचार के बारे में चर्चा करेंगे।

संसार में जन्मे हर एक प्राणी को एक दिन मरना ही होता है । प्रत्येक जाति-जनजाति में जन्म और मृत्यु से संबंधित अपनी-अपनी परंपरा होती है और वे उन परंपराओं के अनुसार निजी नीति-नियमों का पालन करते हैं । पुनर्जन्म में विश्वास रखनेवाला राभा समाज भी इससे अलग नहीं है।

राभा समाज में जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है, तब उसको नहलाकर नया कपड़ा पहनाया जाता है और जीवित काल में मृतक को जो भी खाना-पीना पसंद था, वह सब पका कर बाएं हाथ से थोड़ा-थोड़ा मिट्टी में फेंक दिया जाता है। उसके बाद पुत्रों अथवा आत्मीयों द्वारा मृत व्यक्ति को कंधा देकर श्मशान घाट तक ले जाया जाता है। श्मशान ले जाते समय मृत व्यक्ति के शयनकक्ष से एक धागा निकालकर श्मशान ले जाते हैं। पाँच साल से बड़े लोगों की मौत होने पर उसे श्मशान घाट में जलाया जाता है और पाँच साल के कम उम्र के बच्चों को दफनाया जाता है।

राभा समाज में श्राद्ध निम्न पद्धतियों से किया जाता है।

कालपानी

शव सत्कार के बाद पूरे घर का पवित्र पानी से शुद्धिकरण किया जाता है। मृत व्यक्ति की आत्मा की सद्गति कामना करके श्मशान में जानेवाले लोगों को दारू और पके हुए चावल खिलाते हैं और इस प्रक्रिया को 'कालपानी' कहते हैं।

बादुंदुप्पा

महामारी या कोई विशेष दुर्घटना में परिवार या गाँव के लोगों की मृत्यु के बाद एकसाथ श्राद्ध किये जानेवाले नियम को 'बादुंदुप्पा' कहते हैं। इस नियम के अनुसार मृत आत्माओं के लिए 'थापना' (=भगवान की स्तुति के लिए विशेष रूप से स्थापित किया जानेवाला छोटा चबूतरा) बनाकर उनको चावल, मांस, दारू एकसाथ मिलाकर तीन दिन तीन रात तक अर्पित किया जाता है। इस नियम में पुरुष-महिला दोनों एक हाथ से डंडे में *मानछेलेंका* (=नीलकंठ) पक्षी का पुतला लटकाए पीठ पर बच्चे को कपड़ों से बांध कर ढाल-तलवार से नृत्य करते हैं।

फरकांति या हकटर

लोक विश्वास है कि मृत्यु दिन से सात दिन अथवा तेरह दिन अथवा एक साल के अंदर श्राद्ध सम्पन्न करने से मृतक पुनर्जन्म लेते हैं। पुनर्जन्म विश्वासी राभा लोग इस खुशी में नाच-गाना भी करते हैं। इसे फरकांति या हकटर कहते हैं।

टोरांकाजि अथवा टोरांगिरि

यह बारह अथवा तेरह दिन में की जानेवाली श्राद्ध प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में बहुत खर्च होता है, इसलिए इसका आयोजन कम देखा जाता है।

पति या परिजनों की मृत्यु पर निम्नलिखित गाना गाया जाता है-

पानचुना डालाय
मांदारेना डालाय
ऑकाय डालाय पाकेयान
डुग् डुगर डुगर डुगर
क्रिंता तुखुरसे को
को मांदाय

इस गीत का भाव अत्यंत दुखभरा है, जिसका अर्थ है कि आप नहीं हैं इसलिए सेमल पेड़ पर कबतूर भी रो रहा है। आप फिर से मानव रूप में जन्म लें, पशु-पक्षी के रूप में जन्म न लें।

फरकांति या हकटर

संपर्क-सूत्र:
हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय
गुवाहाटी, असम